



# मेरा चैतन्य लाभ

(एक सिद्ध चैतन्य योगी की आत्मकथा)



दिव्य बन्धु

**India's Fastest Growing Self Publishing House**

# Booksclinic Publishing

————— **Contact Us At** —————

Call or Whatapp @ 8965949968 or Mail @ [publish@booksclinic.com](mailto:publish@booksclinic.com)

Website: - **[www.booksclinic.com](http://www.booksclinic.com)**

B.D. Complex, Near Tifra Over Bridge, Bilaspur, Chhattisgarh, India, 495001

---

This book has been published with all reasonable efforts taken to make the material error-free after the consent of the author.

All rights reserved, no part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

Publisher: Booksclinic Publishing

Edition: First

ISBN: 978-93-5535-132-6

Copyright © Divy Bandhu

Year: 2022

Genre: Fiction

₹: 410/-

Printed in India

## अनुक्रमणिका

क्र. खण्ड	पृष्ठ
<b>साधना खण्ड-1</b>	<b>1</b>
1. वैराग्य का विकास	2
2. मेरे में अन्तरगुरु का आविर्भाव	2
3. मेरा गृहगुहा में प्रवेश	3
4. मेरा विभिन्न भाव से ज्योतिदर्शन	4
5. मेरा रासलीला दर्शन	6
6. मेरी माँ काली से दीक्षा	7
7. मेरा सांप का डर	7
8. मेरा दिव्य दर्शन और श्रवण	8
9. राम कृष्णदेव और साधु संग	9
10. स्वामी विवेकानन्द और तैलंग स्वामी जी का संग लाभ	10
11. चैतन्य देव से दीक्षाप्राप्ति	11
12. पुरी में ज्योतिर्मय जगन्नाथ दर्शन	12
13. तारा पीठ मे अलौकिक घटना	12
14. वृन्दावन की विभूति	13
15. मेरे साथ हिमालय के साधुओं का आश्चर्यजनक आचरण	14
16. प्रयाग में मेरा वर्ण त्याग	16
17. काशी स्थित दुर्गा मंदिर की घटना	16
18. कन्याकुमारी में दिव्य घटना	17
19. आम्र के वृक्ष में मधुक्षरण और पञ्चवटी का जन्म	17
20. मेरे पूर्वजन्म का प्रत्यक्षज्ञान	18
21. मुक्ति की अनुभूति	19
22. मेरा स्थित बोध ने अवस्थान	20
23. मेरे अंदर आनंदस्वरूप भगवान का आविर्भाव	20
24. मेरे अन्दर रासलीला का आस्वादन	22
25. अन्तर गुरु के साथ कथोपकथन/वार्तालाप	23
26. मेरे अंदर गुरु के आविर्भाव का बाह्य प्रमाण	24
27. मेरे अंदर चैतन्यरूप में गुरु का प्रकाश	25
28. मेरे जीवन में तन्त्र-साधना	26
29. मेरी वेदान्त साधना	28
30. मेरी विज्ञापनपथ की साधना	29

31.	गुरु ने मुझको ज्ञान के तीन स्तर बताया ।	30
32.	मेरी उपनिषद साधना	32
33.	मेरी चण्डी साधना	33
34.	मेरी गीता साधना	34
35.	मेरी राजयोग साधना	36
36.	मेरी भागवत साधना	37
37.	मेरा सिद्धाश्रम से योगायोग	39
38.	गुरु के पास मेरी उच्च तंत्र शिक्षा	40
39.	मैथुन योग के संबंध में गुरु की शिक्षा	41
40.	शिक्षा गुरु के पास मेरा समन्वय	42
41.	पहले योग्यता बाद में योग	43
42.	भगवान के साथ मेरा संपर्क नहीं लिखा है?	44
43.	मुझे विभिन्न योग प्राप्ति	45
44.	ज्ञान लोक में गुरु संग	49
45.	ईश्वर के संबंध में गुरु शिक्षा	57
46.	संसार में रहकर ईश्वर लाभ का उपाय	59
47.	गुरु जी से ज्ञानयोग की शिक्षा	66
48.	गुरु से भक्ति योग की शिक्षा	70
49.	मन का परिचय और ईश्वर प्राप्ति	74
50.	गुरु से क्रिया योग की शिक्षा	80
51.	गुरु से ध्यान योग की शिक्षा	86
52.	गुरु से समाधि योग की शिक्षा	91
53.	'मैं' के विषय में गुरु से शिक्षा लाभ	96
54.	गुरुकृपा से सहज अवस्था प्राप्ति	101
55.	अन्तिम उपदेश	102

## ज्ञान खण्ड-2

1.	अज्ञान क्या है? निवारण कैसे हो?	104
2.	दुःख क्या है? उसकी निवृत्ति कैसे हो?	106
3.	संसार का रहस्य	109
4.	सृष्टि का रहस्य	112
5.	मृत्यु का स्वरूप व मूल रहस्य	115
6.	ज्योतिष की अन्तर कथा का प्राकट्य	118
7.	विज्ञान की दृष्टि में साधना और सिद्धि	122
8.	विज्ञान की दृष्टि में ईश्वर	127
9.	सत्य का रहस्य	132
		135

10.	तंत्र साधना का रहस्य	139
11.	कर्म और निष्काम कर्म	145
12.	ज्ञान का रहस्य और उसकी प्राप्ति	149
13.	ईश्वर और उसके अस्तित्व का प्रमाण	153
14.	'मैं' (आत्मा) का रहस्य	157
15.	समाधि का स्वरूप एवं अन्तर्ज्ञान	161
16.	सिद्धाश्रम का साधन रहस्य	163
17.	प्रेम विलास और ईश्वरीय प्रेम का रहस्य	167

### चैतन्य खण्ड-3 172

1.	ईश्वर को नहीं मानते यह कहने में भी चेतना की आवश्यकता है।	174
2.	चेतना के अभाव में व्यक्ति का साधन जीवन उपेक्षित हो जाता है।	174
3.	ईश्वर या चैतन्य इन्द्रियज्ञान के विषय नहीं हैं।	175
4.	चेतना के विभिन्न नाम-रूप ही विभिन्न देवी-देवता हैं।	175
5.	अवचेतन माने संसार तथा सचेतन माने संन्यास।	176
6.	बाह्य पूजा तथा अनुष्ठान से कभी भी चेतना की उपलब्धि नहीं होती।	177
7.	ईश्वर प्राप्ति के पश्चात अन्तःकरण में चेतना सर्वदा आलोकित रहती है।	177
8.	चेतना का अभाव होते ही समस्त अभावों की सृष्टि होती है।	178
9.	अनुशासित न होने तक चेतना का चैतन्य नहीं होता।	178
10.	हमारी चेतना का पतन किस प्रकार होता है ?	179
11.	चेतना की उपेक्षा करके क्या समझना ( ज्ञान ) संभव है ?	179
12.	अज्ञान के साथ अहम् आसक्ति के सम्बन्ध को समझना कठिन है।	180
13.	सृष्टि के क्रमविन्यास में एक ही तत्व है।	180
14.	व्यक्ति यह नहीं जानता कि अवचेतन से वह किस प्रकार परिचालित होता है ?	181
15.	चेतना के मानक के अनुसार ज्ञान का स्तर होता है।	182
16.	षट्चक्र चेतना के ही विभिन्न स्तर हैं।	182
17.	चेतना का जागरण ही कुण्डलिनी जागरण है।	183
18.	हम अवचेतन में सर्वदा भ्रान्ति के शिकार क्यों होते हैं ?	183
19.	चेतना के संस्पर्श से ही ईश्वर सान्निध्य की अनुभूति होती है।	184
20.	चेतना के विभिन्न स्तर और उनका परिचय।	184
21.	व्यक्ति चेतना क्यों दुःख पाती है ?	185
22.	अवचेतन स्तर को न समझ पाने से जीवन निष्फल हो जाता है।	185
23.	हम चेतन हैं या जड़ ?	186
24.	चेतन को छोड़ कर प्रमाण संभव नहीं है।	186
25.	एक ही चेतना जीव-जगत और ईश्वर के रूप में उद्घासित है , उसका प्रमाण क्या है ?	187

26.	साधन मार्ग की प्रमुख घातियां ।	188
27.	साधन मार्ग में जाने के लिए जिन योग्यताओं की आवश्यकताएं हैं।	189
28.	चैतन्य दीक्षा किसे कहते हैं ?	190
29.	चैतन्य का ही व्यक्तिगत नाम है चेतना।	190
30.	चैतन्य ही ईश्वर है इसका क्या प्रमाण है ?	191
31.	जीव और ईश्वर के मध्य चेतना का क्या सम्बन्ध है ?	191
32.	आँखों से ईश्वर अथवा चेतना को क्यों नहीं देखा जा सकता ?	192
33.	चेतना की विच्युति होने से जिस जिस की सृष्टि होती है।	193
34.	चेतना के अभाव में 'मैं और मेरा' का परिचय कैसे होगा?	193
35.	चेतना का अज्ञान स्तर कौन सा है ?	194
36.	एक चैतन्य तत्त्व ही सब कुछ बन गया है।	194
	परिशिष्ट : 1	196
	परिशिष्ट : 2	197
	परिशिष्ट : 3	202
	परिशिष्ट : 4	218
	उपसंहार	222